विजेता जागो-अगस्त 2024

1.**चिन्ह** - प्रिय यीशु, मुझे आप पर भरोसा करने में बहुत कठिनाई हो रही है। मैं कभी-कभी सोचता हूं कि मुझे आश्वस्त करने के लिए एक संकेत की आवश्यकता है, लेकिन मेरे पास पहले से ही सबसे बड़ा संकेत है - वह है आपकी मृत्यु और पुनरुत्थान। क्रूस दर्शाता है कि आप सर्वप्रेमी हैं, और पुनरुत्थान दर्शाता है कि आप सर्वशक्तिमान हैं। मुझे बस यही सबूत चाहिए। (मत्ती 12:39-40)

2. **अद्भुत प्रेम और अनुग्रह** - हे प्रभु, मैं आपसे विस्मय में हूं। आपने मुझ पर जो प्यार दिखाया है और मुझ पर जो अनुग्रह किया है, वह समझ से परे है। प्रशंसा व्यक्त करने के लिए आपको "धन्यवाद" कहना अपर्याप्त लगता है। इसलिये, जैसे तू ने अपने आप को मेरे लिये दे दिया, वैसे ही मैं भी ख़ुशी से अपने आप को तुझे सौंप देता हूँ। (मत्ती 16:24,25)

3. **दफनाया गया और पुनर्जीवित किया गया** -प्रभु, मैं आपकी बलिदानपूर्ण मृत्यु और आपके महिमा पूर्ण पुनरुत्थान के लिए आपको धन्यवाद देता हूं। आपकी स्तुति करता हूँ, पिता, कि मुझे मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है। मेरे पुराने स्व को दफना दिया गया है और ख़त्म कर दिया गया है। मुझमें मसीह की शक्ति के कारण मैं जीवन की नवीनता में चलने के लिए बढ़ाया गया हूं! हालेलुयाह!(रोम. 6:4)

4. **जीवन का स्रोत** - प्रिय प्रभु, मुझे आपकी आत्मा की शक्ति की आवश्यकता है जो लगातार मेरे माध्यम से बहती रहे। मेरे जीवन से वह सब कुछ हटा दो जो आपकी आत्मा को दुखी करता है। मैं अपने खुद को आपको सौंपता हूं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मेरे जीवन पर पूरा नियंत्रण रखें और मुझे अपनी आत्मा से भर दें। मुझे आप पर भरोसा है कि आप मेरे माध्यम से अपना जीवन जियेंगे। (यूहन्ना 7:37-38)

5**. रोशनी में चलना**-हे प्रभु, जैसे-जैसे मैं जीवन से गुजरता हूं, कई बार ऐसा होता है कि यह बहुत अंधकारमय लगता है। मुझे नहीं पता कि कहाँ जाना है या क्या करना है। परन्तु आपने कहा कि आप जगत की ज्योति हैं। इसलिए, मैं आपका अनुसरण करना चाहता हूं, विश्वास से चलना, न कि दृष्टि से। मुझे जीवन की रोशनी देने के लिए धन्यवाद! (यूहन्ना 8:12)

6. **अपनी संपत्ति पर कब्ज़ा करो** - प्रिय प्रभु, जब से मैंने मसीह को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में प्राप्त किया है, आपका पवित्र आत्मा अब मुझमें वास करता है। इसलिए, आपका जीवन अब मेरी संपत्ति है और मेरा शरीर अब आपका पवित्र मंदिर है। इसलिए, मैं आपके जीवन को अपना जीवन मानता हूं। मैं आपको अपने जीवन का पूरा अधिकार देता हूं। अपना जीवन मेरे माध्यम से जियो. (ओबद्य. 1:17)

7. **हर्षित**-"हे सारी पृथ्वी के लोगों, यहोवा के लिये जयजयकार करो। प्रसन्नता के साथ प्रभु की आराधना करो: हर्षित गीत गाते हुए उसके सामने आओ" (भजन 100:1)। हम, कार्य-उन्मुख व्यक्ति, यह बहुत आसानी से भूल जाते हैं कि जीवन काम और उपलब्धियों से कहीं अधिक है। हमारे ईश्वर ने हमें अपने लिए बनाया है और वह आनंदमय उपासकों की तलाश में है। उसका सम्मान और आराधना करने के लिए समय निकालें।

8. **प्रभु की स्तुति करो** – "जितने प्राणी हैं प्रभु की स्तुति करो" (भजन 150:6)। प्रभु के लोगों की सबसे पुरानी गीतपुस्तक में अंतिम स्तोत्र में प्रभु की स्तुति करने के लिए 13 बार आह्वान किया गया है

(एनआईवी)। मैं दोषी ठहराया गया हूँ! अक्सर मेरा ध्यान सर्वशक्तिमान पर नहीं होता। क्या आप भी भटक रहे हैं? आइए सलाह पर ध्यान दें और प्रभु की स्तुति करें कि वह कौन है।

9. **एक नया गीत** -“अब उसके लिये नया गीत गाओ। खुशी की धुन सुन्दरता से बजाओ!” (भजन 33:3)। नए गीत, हमारे परमेश्वर की स्तुति के गीत की अनुमति दें और यह आपके जीवन के लिए प्रेरणा बनने के लिए यीशु मसीह में उनके अद्भुत प्रेम के लिए आभार हो। उसकी मंडली के बीच में सचेत रूप से उनकी आराधना करें।

10. **नृत्य** -“वे नाचते हुए उसके नाम की स्तुति करें; वे डफ और वीणा बजाते हुए उसका भजन गाएं” (भजन 149:3)। आराधना का रूप अलग-अलग हो सकता है, लेकिन हमारा आनंद और प्रभु के प्रति धन्यवाद सुनाई और दिखाई देना चाहिए। प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको एक ऐसा व्यक्ति बनाये जो ख़ुशी से अपने मुक्तिदाता की स्तुति करे।

11**. सर्व पर्याप्त अनुग्रह**- प्रिय प्रभु, मेरी क्षमताएं बहुत सीमित हैं, लेकिन आपका अनुग्रह असीमित है। विश्वास के माध्यम से सर्व पर्याप्त व्यक्ति मसीह मुझमें बना रहता है। मुझमें आपका जीवन मुझे हर अच्छे काम के लिए प्रेरित करता है। हे प्रभु, मैं आपके पर्याप्त अनुग्रह के लिए आपका धन्यवाद करता हूँ!

12. **द्वारपाल** -"दुष्टता के तम्बू में रहने की अपेक्षा मुझे परमेश्वर के घर का द्वारपाल बनना अच्छा लगता है" (भजन 84:10)। द्वारपाल भरोसेमंद अधिकारी थे जो अशुद्ध चीज़ों को पवित्र स्थान में प्रवेश करने से रोकते हुए, प्रभु के घर के दरवाजे खोलते और बंद करते थे। पुरुषो, स्वयं को ऐसे व्यक्ति के रूप में स्थापित करो जो लोगों को ईश्वर के पास लाता है।

13. **परमेश्वर के रहस्य** -"निश्चय प्रभु तब तक कुछ नहीं करता जब तक वह अपने दास भविष्यद्वक्ताओं पर अपनी गुप्त युक्ति प्रकट न कर दे" (आमोस 3:7)। जैसे ईश्वर ने पुराने नियम में स्वयं को भविष्यवक्ताओं के सामने प्रकट किया, वैसे ही प्रभु यीशु आज अपने शिष्यों, अपने मित्रों के सामने प्रकट करते हैं। (यूहन्ना 15:15) ऐसे व्यक्ति बनें जो वचन में रह कर परमेश्वर के रहस्यों को सुनता और समझता है।

14. **प्रभु के पात्र** - "हे प्रभु के पात्रों के ढोनेवालो, अपने आप को शुद्ध करो" (यशा. 52:11बी). मसीही, पुरुष और महिलाएं जिन्होंने यीशु का अनुसरण करना स्वीकार कर लिया है, उन्हें पृथ्वी का नमक और दुनिया की रोशनी कहा जाता है। पुरुषो, पवित्र आत्मा को आपको शुद्ध करने की अनुमति देने के लिए तैयार रहें और अपनी इच्छा पूरी तरह से प्रभु यीशु मसीह को सौंप दें।

15. **आत्मविश्वास** -“हे प्रभु, सुनो! हे प्रभु, क्षमा करें! हे प्रभु सुनो और कार्रवाई करो” (दानि० 9:18)। परमेश्वर ने दानिय्येल की प्रार्थना का उत्तर दिया और उसे "उच्च सम्मान का व्यक्ति" कहा। (दानि. 10:19) क्रूस पर मसीह के मुक्ति कार्य में विश्वास के माध्यम से आप और मैं परमेश्वर के प्रिय बच्चे बने हैं। इसलिए, हम भी आत्मविश्वास के साथ प्रार्थना कर सकते हैं।

16. **नाइजीरिया के लिए प्रार्थना करें** - उत्तरी नाइजीरिया मसीहियों के लिए, पृथ्वी पर सबसे खतरनाक क्षेत्र है। उत्पीड़न का दस्तावेजीकरण करने वाली एजेंसी ओपन डोर्स के अनुसार, अन्य सभी देशों की तुलना में नाइजीरिया में हर साल अधिक ईसाइयों को उनके विश्वास के लिए मार दिया जाता है। सताए गए चर्च को भीतर से ईश्वर की शक्ति का अनुभव कराने के लिए प्रार्थना करें।

17. **विश्वास के योद्धा** - प्रभु ऐसे लोगों की तलाश कर रहे हैं जिन्हें वह अपनी इच्छा के अनुसार बदल सकें - ऐसे लोग जो विश्वास के योद्धा बनने के लिए उत्सुक और इच्छुक हों। प्रार्थना करें कि वह आपको भीतर से बदल दे। (2 कुरिं. 3:18)

18. **ईश्वरीय चरित्र** - यीशु मसीह ने हमारे पापों की कीमत अपने जीवन से चुकाई है। अब वह हमें अपनी छवि में आकार देने के लिए उत्सुक है। प्रार्थना करें कि वह आपको मसीह जैसा चरित्र विकसित करने में मदद करे। (1 कुरिन्थियों 11:1)

19. **मेल** – जब लोग आपसे आपके जीवन के बारे में पूछते हैं, तो क्या आप उन्हें बता सकते हैं कि आप मेल-मिलाप के व्यवसाय में शामिल हैं? प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपको लोगों को यीशु के पास ले जाने का अवसर दे और अवसर आने पर आप में कार्य करने का साहस हो। (कुलु 4:3,4)

20. **न्याय मत करो** - जब मसीह में किसी भाई या बहन ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया हो, तो न्याय करने में जल्दबाजी न करें। याद रखें कि वे भी आपकी ही तरह सिर्फ इंसान हैं। प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपको ऐसी परिस्थितियों से निपटने के लिए बुद्धि दे जैसा स्वयं यीशु ने किया। (मत्ती 7:1)

21. **धन्यवाद**-"किसी बात की चिन्ता न करो, परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख प्रगट करो" (फिलि. 4:6)। हमारे स्वर्गीय पिता के प्यारे बच्चों के रूप में, हम उसे सब कुछ बता सकते हैं और निश्चिंत हो सकते हैं कि वह इसका ध्यान रखेगा। जब हम धन्यवाद देते हैं, तो हम उस पर अपना भरोसा व्यक्त करते हैं।

22. **स्तुति** - “सब राष्ट्रों के लोग यहोवा की स्तुति करो; हे सब लोगों, उसकी स्तुति करो” (भजन 117:1)। जब हम उसकी स्तुति करने को तैयार होते हैं, चाहे कुछ भी हो, वह हमारे दिलों को खुशी और एक नए दृष्टिकोण से भर देगा। हमें एक ऐसी आशा है जिसके बारे में दुनिया नहीं जानती। परमेश्वर उन लोगों की देखभाल करता है जो उस पर भरोसा करते हैं।

23. **प्रतिबद्धता**-"क्योंकि उसकी करूणा हम पर बड़ी है, और प्रभु की सच्चाई अनन्त है - प्रभु की स्तुति करो" (भजन 117:2)। प्रभु में हमारे आनंद से यीशु में प्रेम, क्षमा और आशा के संदेश को सभी मनुष्यों तक पहुंचाने की उनकी इच्छा को पूरा करने की हमारी प्रतिबद्धता बढ़ती है।

24. **खज़ाना** - "पृथ्वी पर अपने लिये धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं" (मत्ती 6:19)। जो कुछ भी हम परमेश्वर में निवेश करते हैं चाहे वह पैसा हो, समय हो या हमारे प्रयास यह एक आशीष बन जाए और हमें वास्तव में अमीर बना दे। क्या आप शाश्वत धन में निवेश कर रहे हैं?

25. **मर्द बनो** -"क्योंकि हम उसकी कारीगरी हैं..." (इफि. 2:10ए)। यदि आप एक लड़के के रूप में पैदा हुए हैं, तो इसे आपके लिए परमेश्वर की योजना के रूप में स्वीकार करें, भले ही आप कठोर और सख्त न हों, बल्कि संवेदनशील और दयालु हों। वह आपको एक ऐसा आदमी बनाना चाहता है जो दूसरों के लिए एक आशीष हो।

26. **ध्यान देने योग्य** - "अंत में, भाइयों, जो कुछ सत्य है, जो कुछ सम्माननीय है, जो कुछ सही है, जो कुछ शुद्ध है, जो कुछ प्यारा है, जो कुछ भी अच्छी प्रतिष्ठा का है, यदि कोई उत्कृष्टता है और यदि कुछ प्रशंसा के योग्य है तो इन बातों पर ध्यान दें" (फिल 4:8). अधिक जानकारी पर निर्भर न रहें। पहले परमेश्वर और उनके मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करें।

27. **एक अलग तरीका** -"अन्यजातियों के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं... परन्तु तुम्हारे बीच ऐसा नहीं है... जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास हो।" (मत्ती 20:25-28) आइए यह कभी न भूलें कि परमेश्वर का राज्य इस संसार का नहीं है। एक ऐसा व्यक्ति बनें जो अपने परमेश्वर के लिए जीता है, दूसरों की सेवा करने को तैयार है और जो अपने उद्धारकर्ता का प्रतिनिधित्व करता है।

28. **आंतरिक संघर्ष** -"क्या आपके सुखों का स्रोत नहीं है जो आपके सदस्यों में युद्ध छेड़ता है?" (याकूब 4:1) पुरुषो, अच्छी लड़ाई लड़ने के लिए तैयार रहें और पवित्र आत्मा को अपने दिल और दिमाग पर नियंत्रण करने की अनुमति दें। क्योंकि"...यदि तुम आत्मा के द्वारा शरीर के कामों को मारोगे, तो जीवित रहोगे।" (रोम. 8:13बी)

29. **डरो मत**-"जब तुम युद्धों और युद्ध की अफवाहें सुनो, तो भयभीत न होना" (मरकुस 13:7,8)। परमेश्वर के लोगों के रूप में हम जानते हैं कि हमारा परमेश्वर अंत में विजयी होता है। वह हमारी परेशानियों को जानता है, लेकिन वह हमें उस पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहता है। "संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु साहस रखो; मैंने संसार पर विजय पा ली है" (यूहन्ना 16:33)।

30. **परमेश्वर का कवच** -"परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने स्थिर खड़े रह सको" (इफि. 6:11)। ऐसा व्यक्ति बनें जो तुरंत खो न जाए। परमेश्वर के राज्य में अपना स्थान लें। हम एक आध्यात्मिक लड़ाई में हैं. पवित्रशास्त्र की सच्चाई का पालन करें और पवित्र आत्मा को आपको सुसज्जित करने और उपयोग करने की अनुमति दें।

31**. अंतिम शब्द** -"मैं अल्फ़ा और ओमेगा हूँ, प्रथम और अंतिम, आरंभ और अंत" (प्रका0वा0 22:13)। संसार के शासक आते हैं और चले जाते हैं। केवल हमारा प्रभु यीशु मसीह, मुक्तिदाता, स्थिर और शाश्वत है। सुसमाचार बांटें, उसे अपने जीवन में पहला स्थान दें। उसपे ध्यान दो और दिल से उसकी स्तुति गाओ.